Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on **"_सूफी संप्रदाय।"**

(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)

सूफी संप्रदाय।

इस्लाम धर्म की नीवं पैगम्बर मुहम्मद साहब ने डाली थी। इस्लाम धर्म ने अपने अन्दर कई धर्मिक और आध्यात्मिक आन्दोलनों का उदय देखा। ये आन्दोलन प्रमुख रूप से वुफरान की व्याख्या पर आधरित थे। इस्लाम वेफ अन्दर दो प्रमुख सम्प्रदायों का उदय हुआ कृ सुन्नी और शिया। हमारे देश में दोनों मत हैं लेकिन कई अन्य देशों में जैसे ईरान, ईराक, पाकिस्तान आदि देशों में आप वेफवल एक ही मत वेफ अनुयिायों को देख पाएँगे।

सुन्नी संप्रदाय में इस्लामी कानून की चार प्रमुख विचारधराएँ हैं। ये वुफरान और हदीस (हजरत मुहम्मद साहब वेफ कार्य और कथन) पर आधरित हैं। इनमें से आठवीं शताब्दी की इनकी विचारधरा को पूर्वीतुर्कों ने अपनाया और यही तुर्वफ बाद में भारत में आए। पुरातनवंशी सुन्नी समुदाय को सबसे बड़ी चुनौती

मुताजिला अर्थात तर्वफप्रधन दर्शन ने दी जो कठोर एवेफश्वरवाद का प्रतिपादक था। इस मत वेफ अनुसार ईश्वर न्यायकारी है और मनुष्यों वेफ दुष्कर्मों से उसका कोई लेना देना नहीं है। मनुष्यों वेफ पास अपनी स्वतन्त्रा इच्छा शक्ति है और वे स्वयं अपने कर्मों वेफ लिए उत्तरदायी हैं। मुताजिलों का विरोध् अशरी विचारधरा ने किया। अबुल हसन अशरी (873&935 ई.पू-) द्वारा स्थापित अशरी विचारधरा ने पुरातन पंथी सिद्धान्त वेफ समर्थन में अपने बुद्धिवादी दर्शन (कलाम) को विकसित किया। इस विचारधरा वेफ अनुसार ईश्वर जानता है, देखता है और बात भी करता है। वुफरान शाश्वत है और स्वयंभू है। इस विचारधरा वेफ सबसे बड़े विचारक थे अबू हमीद अल गजाली (1058-1111) जिन्होंने रहस्यवाद और इस्लामी परम्परावाद वेफ बीच मेल कराने का प्रयत्न किया। वह एक महान धर्म विज्ञानी थे जिन्होंने 1095 में एक सूफी का जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ किया। उन्हें परम्परावादी तत्वों और सूफी मतावलम्बियों दोनों वेफ द्वारा ही बहुत अध्कि सम्मानपूर्वक देखा जाता था। अल गजली ने सभी गैरपरम्परावादी सुन्नी विचारधराओं पर आव्रफमण किया। वे कहते थे सकारात्मक ज्ञान तर्वफ

द्वारा नहीं प्राप्त किया जा सकता बल्कि आत्मानुभूति द्वारा ही देखा जा सकता है। सूफी भी उलेमाओं की भांति ही वुफरान पर निष्ठा रखते थे।

राज्य द्वारा स्थापित नई शिक्षा प्रणाली वेफ कारण गजाली वेफ विचारों का प्रभाव बहुत अध्कि पड़ा। इसवेफ अन्तर्गत मदरसों की स्थापना हुई जहां विद्वानों को अशरी विचारधरा से परिचित करवाया जाता था। उन्हें यहाँ पुरातनपन्थी सुन्नी विचारों वेफ अनुसार शासन चलाने की शिक्षा दी जाती थी। इन विद्वानों को उलेमा कहते थे। उलेमाओं ने मध्य भारत की राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

सूफी

उलेमा वेफ ठीक विपरीत सूफी थे। सूफी रहस्यवादी थे। वे पवित्रा धर्मपरायण पुरुष थे, जो राजनैतिक व धर्मिक जीवन वेफ अध्:पतन पर दु:खी थे। उन्होंने सार्वजनिक जीवन में ध्न वेफ अभद्र प्रदर्शन व 'धर्म भ्रष्ट शासकों' की उलेमा द्वारा सेवा करने की तत्परता का विरोध् किया। कई लोग एकान्त तपस्वी जीवन व्यतीत करने लगे एवं राज्य से

उनका कोई लेना-देना नहीं रहा। सूफी दर्शन भी उलेमा से भिन्न था। सूपिफयों ने स्वतंत्रा विचारों एवं उदार सोच पर बल दिया। वे धर्म में औपचारिक पूजन, कठोरता एवं कटरता वेफ विरुद्ध थे। सूपिफयों ने धर्मिक संतुष्टि वेफ लिए ध्यान पर जोर दिया। भक्ति संतों की तरह, सूफी भी धर्म को 'ईश्वर वेफ प्रेम' एवं मानवता की सेवा वेफ रूप में परिभाषित करते थे। वुफछ समय में सूफी विभिन्न सिलसिलों (श्रेणियों) में विभाजित हो गए। प्रत्येक सिलसिले में स्वयं का एक पीर (मार्गदर्शक) था जिसे ख्वाजा या शेख भी कहा जाता था। पीर व उसवेफ चेले खानका (सेवागढ़) में रहते थे। प्रत्येक पीर अपने कार्य को चलाने के लिए उन चेलों में से किसी एक को वली अहद (उत्तरिाध्कारी) नामित कर देता था। सूपिफयों ने रहस्यमय भावातिरेक जगाने वेफ लिए समां (पवित्रा गीतों का गायन) संगठित किए। ईराक में बसरा सूफी गतिविधियों का केन्द्र बन गया। यह ध्यान देने की बात है कि सूफी संत एक नया धर्म स्थापित नहीं कर रहे थे अपितु इस्लामी ढांचे वेफ भीतर ही एक अध्कि उदार आन्दोलन प्रारम्भ कर रहे थे। वुफरान में उनकी निष्ठा उतनी ही थी जितनी उलेमाओं

की।

References: Internet & Competitive books.